बृहस्पति ग्रह की पौराणिक कथा

पुराणों के अनुसार बृहस्पति के जन्म को लेकर अनेकों कथाएं हैं, ऋषि अंगिरा के पुत्र का नाम था अथर्वन। आगे चलकर अथर्वन के पुत्र हुए उशिज और उशिज के तीन पुत्र हुए उचथ्य, बृहस्पति और संवर्त। एक अन्य कथा के अनुसार ऋषि अंगिरा की पत्नी ने विवेकशील, तपस्वी और ज्ञानी पुत्र की प्राप्ति के लिए सनतकुमारों द्वारा बताये व्रतों का विधि विधान और पूर्ण श्रद्धा के साथ सभी व्रतों का पालन किया, जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई जिसका नाम बृहस्पति रखा गया। बृहस्पति शास्त्रों में पारंगत, विवेकशील, तपस्वी और कुशाग्र बुद्धि वाले थे। बृहस्पति ने प्रभास तीर्थ में जाकर भगवान भोले शंकर की कठोर तपस्या की, बृहस्पति की इस कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान भोले शंकर प्रकट हुए और उन्होंने बृहस्पति को अनेकों आशीर्वाद दिये, साथ ही देवताओं का गुरू बनने का भी वरदान दिया। पुराणों में मिलता है कि बृहस्पति की तीन पत्नियां थी पहली पत्नी का नाम था शुभा, जिनसे उन्हें सात कन्याएं प्राप्त हुई, दूसरी पत्नी का नाम था तारा जिनसे उन्हें सात पुत्र और एक कन्या रत्न की प्राप्ति हुई, तीसरी पत्नी का नाम था ममता जिनसे उन्हें दो पुत्र क्रमशः भारद्वाज जो सप्त ऋषियों में से एक हुए और दूसरे पुत्र का नाम था कच। भगवान शंकर के आशीर्वाद से बृहस्पति देवताओं के गुरू नियुक्त हुए, इसलिए इनको गुरू के नाम से भी जाना जाता है। देवासुर संग्राम में बृहस्पति इन्द्र और देवताओं की रक्षा करने की यथा संभव प्रयत्न करते थे और यज्ञ से देवताओं का भाग भी दिलवाते थे, दूसरी ओर शुक्राचार्य वृषपर्वा और दैत्यों की रक्षा करते थे। देवताओं के गुरू बृहस्पति और दैत्यों के गुरू शुक्राचार्य दोनों में एक बड़ा अन्तर यह था कि शुक्राचार्य मृतसंजीवनी विद्या जानते थे, इसलिए युद्ध में मारे गए सभी असुरों और दैत्यों को शुक्राचार्य मृतसंजीवनी विद्या का प्रयोग करके उन्हें पुनः जीवित कर देते थे। इस बात का बृहस्पति को बड़ा क्षोभ था। देवताओं की रक्षा हेतु बृहस्पति ने अपने पुत्र कच को मृतसंजीवनी विद्या सीखने के लिए शुक्राचार्य के पास भेजने का खतरा उठा लिया, पर बृहस्पति यह भी जानते थे कि शुक्राचार्य

की केवल एक ही पुत्री है जिसका नाम देवयानी था, यदि वह कच पर आसक्त हो गई तो पुत्री मोह में आकर वह कच को मृतसंजीवनी विद्या अवश्य सिखा देंगे और हुआ भी कुछ ऐसा ही, जब कच शुक्राचार्य के पास पहुंचे तो उन्होंने दैत्य गुरू शुक्राचार्य को अपना पूर्ण परिचय बताया और देवयानी के आग्रह पर शुक्राचार्य ने कच को अपने आश्रम में रख लिया, इस बात का असुरों और दैत्यों ने बहुत विरोध किया पर शुक्राचार्य को रोकने का साहस न कर सके, परन्तु द्वेष से भरे हुए असुरों और दैत्यों ने मिलकर कच की दो बार हत्या कर दी और शुक्राचार्य ने दोनो बार अपनी पुत्री देवयानी के आग्रह पर मृतसंजीवनी विद्या का प्रयोग करके कच को जीवित कर दिया, इस सब के बाद भी तीसरी बार असुरों और दैत्यों ने फिर कच की हत्या कर दी और उसे जलाकर उसकी राख को मदिरा में मिलाकर शुक्राचार्य को ही पिला दिया। एक बार फिर से पुत्री के आग्रह पर जब शुक्राचार्य ने कच को आवाज लगाई तो मालूम हुआ कि कच तो उन्हीं के उदर में ही है, तब शुक्राचार्य ने कच को उदर में ही मृतसंजीवनी विद्या सिखा दी, उसके बाद कच शुक्राचार्य के पेट को फाड़कर बाहर निकल आया और उसी मृतसंजीवनी विद्या का प्रयोग करके शुक्राचार्य को फिर से जीवित कर दिया। कच मृतसंजीवनी विद्या जान चुका था इसलिए उसका शुक्राचार्य के पास आने का संकल्प पूर्ण हो चुका था और वह देवयानी को छोड़कर अपने पिता बृहस्पति के पास वापस चला गया।

बृहस्पति ग्रह की पौराणिक कथा का ज्योतिषीय संबंध

देवताओं का गुरू होकर उनका मार्ग दर्शन करना एक अलग बात है, पर देवताओं के कल्याणार्थ अपने पुत्र को ही शत्रुओं के पास स्वयं भेजना बड़ी बात है, स्पष्ट है कि जन्म पत्रिका में बृहस्पति सदा आपके कल्याणार्थ कार्य करते हैं और सदा आपके ऊपर अपनी कृपा बनाए रखते हैं। बृहस्पति की सभी दशाएं आपके उद्धार के लिए होती हैं, यदि आप पूर्ण रूप से प्रयत्नशील हैं, तो देवताओं के गुरू का आशीर्वाद आपका कल्याण अवश्य करेगा।

बृहस्पति ग्रह अत्यन्त शुभ माना जाता है, सभी नौ ग्रह आपस में नैसर्गिक मित्र, शत्रु और सम भाव रखतें हैं, पर बृहस्पति से कोई ग्रह शत्रुता नही रखता। यह एक दिन में 5 मिनट से लेकर 15 मिनट तक चलता है। एक राशि में इसको लगभग 13 महीने लग जाते हैं। जन्म कुंडली में बृहस्पति ज्ञान व उत्साह को दर्शाते हैं। बृहस्पति को गुरू के नाम से भी जाना जाता है। गुरू शब्द से स्पष्ट है, कि विद्वान, ज्ञानी, समझदार, दक्ष आदि। सभी देवताओं के गुरू हैं बृहस्पति, यदि आपकी जन्म पत्रिका में बृहस्पति बलशाली है और विंशोत्तरी महादशा आपके अनुकूल है और आप प्रयत्नशील हैं तो आप में भी ये सभी गुण आ सकते हैं। शुभता के आधार पर बृहस्पति प्रथम श्रेणी में गिने जाते हैं। मुहूर्त शास्त्र में भी बृहस्पति यदि अस्त हैं, तो अनेकों शुभ कार्य रोक दिए जाते हैं। इसका कारण है कि गुरू के आशीर्वाद के बिना आपका कल्याण संभव नही है। बृहस्पति सच्चाई, पवित्रता शुभता का प्रतीक है, जीवन में भी हमें आगे बढ़ने के लिए इसी प्रकार के गुण वाले व्यक्तियो की आवश्यकता होती है और हम चाहे कैसे भी हों पर हमे व्यक्ति बृहस्पति के गुण वाले ही मिलें, ठीक इसी प्रकार सभी ग्रहों को बृहस्पति के आशीर्वाद की आवश्यकता होती है। बृहस्पति अमृत की वर्षा करते हैं, इसलिए जहां बैठें या दृष्टि रखें वहां की सकारात्मक उर्जा को बढ़ाते हैं। कुण्डली के केन्द्र में यदि बृहस्पति हों तो कुण्डली के कई दोषो को भी दूर कर देतें हैं।

बृहस्पति ग्रह के कुछ अन्य ज्योतिषीय संबंध निम्न प्रकार के हैं:-

1	कारक	विधा
2	संबंध	संतान
3	स्वभाव	शुभ और सौम्य
4	गोत्र	अंगीरस
5	दिन	बृहस्पतिवार
6	वाहन	हाथी (गज)
7	रंग	पीला

8	दिशा	पूवोत्तर (North-East)
9	गुण (प्रकृति)	सतोगुणी
10	लिंग	पुरूष
11	वर्ण (जाति)	ब्राह्मण
12	तत्व	आकाश
13	स्वाद	मीठा
14	धातु	सोना
15	ऋतु	हेमन्त ऋतु
16	दृष्टि विशेष	5,7,9 (पूर्ण दृष्टि)
17	भोजन	काबुली चना
18	शारीरिक अंग	चर्बी, मस्तिष्क
19	अन्न दान	दाल चना
20	द्रव्य दान	घी
21	विंशोत्तरी महादशा	16 वर्ष
22	जप संख्या	19,000
23	रत्न	पुखराज, (संस्कृत में पुष्पराग)
24	उपरत्न	सुनहला, सोनल, केसरी
25	सहचरी	तारा, शुभा, ममता
26	चरादि	स्थिर
27	समिधा	पीपल
28	बृहस्पति के मित्र ग्रह	सूर्य, चन्द्रमा, मंगल
29	बृहस्पति के सम ग्रह	शनि, राहु, केतु
30	बृहस्पति के शत्रु ग्रह	बुध, शुक्र
31	उच्च राशि	कर्क (0° से 5° तक)
32	नीच राशि	मकर (0° से 5° तक)
33	मूल त्रिकोण राशि	धनु (0° से 10° तक)

34	स्वग्रही राशि	धनु (11° से 30° तक)
35	राशि स्वामी	धनु, मीन
36	नक्षत्र स्वामी	पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद
37	बृहस्पति के आधी देवता	इन्द्र
38	बृहस्पति के प्रत्यधि देवता	ब्रह्मा
39	बृहस्पति ग्रह का कद	ह्रस्व (छोटा)/मध्यम (सामान्य)
40	बृहस्पति ग्रह शुष्काादि में	जलीय ग्रह